भाषा और साक्षरता

कहानी सुनाना

भारत में विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

एस.आर.मोहन्ती
अपर मुख्य सचिव

अ.शा.पत्र क्र R.S.K/10
दूरभाष कार्यालय - 0755-4251330
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
मंत्रालय, वल्लभ भवन, भोपाल-462 004
भोपाल, दिनांक 20-1-2016

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

बच्चों की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण और रोचक बनाने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग निरन्तर प्रयासरत् है। आप सभी के प्रयासों से शिक्षकों के शिक्षण कौशल में भी निखार आया है और शालाओं में कक्षा शिक्षण भी आंनददायी तथा बेहतर हुआ है।

इसी दिशा में शिक्षकों को बाल केन्द्रित शिक्षण की ओर उन्मुख करने और शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को लेकर, TESS India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) का विकास किया गया है। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता व सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। आशा है कि ये संसाधन, शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन और क्षमतावर्द्धन में लाभकारी और उपयोगी सिद्ध होंगे।

राज्य शिक्षा केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में TESS India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया गया हैं। आशा है इन संसाधनों के उपयोग से प्रदेश के शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षक लाभान्वित होंगे और कक्षाओं में पठन पाठन को रूचिकर और गुणवत्तायुक्त बनाने में मदद मिलेगी।

शुभकामनाओं सहित,

(एस.आर.मोहन्ती)

दीप्ति गौड मुकर्जी
आयुक्त
राज्य शिक्षा केन्द्र एवं
सचिव
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग

अर्द्ध शा. पत्र क्र.: 8
दिनांक : 12-1-16
पुस्तक भवन, बी-विंग
अरेरा हिल्स, भोपाल-462011
फोन : (का.) 2768392
फैक्स : (0755) 2552363
वेबसाइट : www.educationportal.mp.gov.in
ई-मेल : rskcommmp@nic.in

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

सभी बच्चों को रूचिकर और बाल केन्द्रित शिक्षा उपलब्ध हो इसके लिए आवश्यक है कि हमारे शिक्षकों को शिक्षण की नवीनतम तकनीकों और शिक्षण विधियों से परिचित कराया जाए साथ ही इन तकनीकों के उपयोग के लिए उन्हे प्रोत्साहित भी किया जाए। TESS India द्वारा तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) के उपयोग से शिक्षक शिक्षण प्रविधि के व्यावहारिक उपयोग को सीख सकते हैं। इनकी सहायता से शिक्षक न केवल विषय वस्तु को सुगमता पूर्वक पढ़ा सकते हैं बल्कि पठन पाठन की इस प्रक्रिया में बच्चों की अधिक से अधिक सहभागिता भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

राज्य शिक्षा केन्द्र स्कूल शिक्षा विभाग ने स्थानीय भाषा में तैयार किये गये इन मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को अपने पोर्टल www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया है।

आशा हैं, कि आप इन संसाधनों का कक्षा शिक्षण के दौरान नियमित रूप से उपयोग करेंगे और अपने शिक्षण कौशल में वृद्धि करते हुए बच्चों की पढ़ाई को आनंददायक बनाने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(दीप्ति गौड मुकर्जी)

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

टेस–इण्डिया स्थानीयकृत ओईआर निर्माण में सहयोग

मार्गदर्शन एवं समीक्षा :
श्रीमती स्वाति मीणा नायक, अपर मिशन संचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एच. के. सेनापति, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. ओ.पी.शर्मा, अपर संचालक, मध्यप्रदेश एससीईआरटी
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
प्रो.जयदीप मंडल, विभागाध्यक्ष विज्ञान एवं गणित शिक्षा संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आर. रायजादा, सहप्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष विस्तार शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. वी.जी. जाधव, से.नि. प्राध्यापक भौतिक, एनसीईआरटी
डॉ. के. बी. सुब्रमण्यम से.नि. प्राध्यापक गणित, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आई. पी. अग्रवाल से.नि. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. अश्विनी गर्ग सहा. प्राध्यापक गणित संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. एल. के. तिवारी, सहप्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री एल.एस.चौहान, सहा. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. श्रुति त्रिपाठी, सहा. प्राध्यापक अंग्रेजी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. रजनी थपलियाल, व्याख्याता अंग्रेजी, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. मधु जैन, व्याख्याता शास. उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल
डॉ. सुशोवन बनिक, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. सौरभ कुमार मिश्रा, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री. अजी थॉमस, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. राजीव कुमार जैन, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
स्थानीयकरण :
भाषा एवं साक्षरता
डॉ. लोकेश खरे, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एम.एल. उपाध्याय से.नि. व्याख्याता शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय मुरैना
श्री रामगोपाल रायकवार ,कनि. व्याख्याता, डाइट कुण्डेश्वर, टीकमगढ़
डॉ. दीपक जैन अध्यापक, शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय क्र 1 टीकमगढ़
अंग्रेजी
श्री राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्रीमती कमलेश शर्मा. डायरेक्टर , ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री हेमंत शर्मा, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री मनोज कुमार गुहा वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी. मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एफ.एस.खान, वरि.व्याख्याता, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान (आईएएसई) भोपाल
श्री सुदीप दास, प्राचार्य, शास.उ.मा.विद्यालय दालौदा, मन्दसौर
श्रीमती संगीता सक्सेना, व्याख्याता, ,शास.कस्तूरबा कन्या उ.मा.विद्यालय भोपाल
गणित
श्री बी.बी. पी. गुप्ता, समन्वयक गणित, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ए. एच. खान प्राचार्य शास.उ.मा.विद्यालय रामाकोना, छिंदवाड़ा
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गुप्त , प्राचार्य शास. जीवाजी ऑब्जर्वेटरी उज्जैन
डॉ.आर,सी. उपाध्याय, वरि. व्याख्याता, डाइट, सतना
डॉ. सीमा जैन, व्याख्याता, शास. कन्या उ.मा.विद्यालय गोविन्दपुरा, भोपाल
श्री सुशील कुमार शर्मा, शिक्षक, शास. लक्ष्मी मंडी उ.मा.विद्यालय, अशोका गार्डन, भोपाल
विज्ञान
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
डॉ. सुसम्मा जॉनसन, व्याख्याता एस.आई.एस.ई. जबलपुर मध्यप्रदेश
डॉ.सुबोध सक्सैना, समन्वयक एससीईआरटी मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री अरूण भार्गव, वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्रीमती सुषमा भट्ट, वरि.व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ब्रजेश सक्सेना, प्राचार्य, एससीईआरटी ,मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. रेहाना सिद्दकी से.नि. व्याख्याता सेन्ट फ्रांसिस हा. से. स्कूल भोपाल

TESS-India (विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा) का उद्देश्य मुक्त शैक्षिक संसाधनों की सहायता से भारत में प्रारंभिक और सेकेण्डरी शिक्षकों के कक्षा अभ्यास व कक्षा निष्पादन को सुधारना है जिसमें वे इन संसाधनों की सहायता से विद्यार्थी-केंद्रित, सहभागी दृष्टिकोणों का विकास कर सकें। टेस इंडिया के मुक्त शैक्षिक संसाधन शिक्षकों के लिए स्कूल पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त,सहयोगी पुस्तिका या संसाधन की तरह हैं। इसमें शिक्षकों के लिए कुछ गतिविधियां दी गई हैं जिन्हे वे कक्षाओ में विद्यार्थियों के साथ प्रयोग में ला सकते हैं, इसके साथ साथ कुछ केस स्टडी दी गई हैं जो यह बताती हैं कि कैसे अन्य शिक्षकों ने पाठ्य विषय को कक्षाओं में पढ़ाया और अपनी विषय संबंधी जानकारियों को बढ़ाने तथा पाठ योजनाओं को तैयार करने में संसाधनों का उपयोग किया।

TESS-India OER भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किये गये है और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट रूप में उपयोग के लिए उपलब्ध हैं *(http://www.tess-india.edu.in)*। *OER* कार्यक्रम से जुड़े प्रत्येक भारतीय राज्य के शिक्षकों के उपयोग के लिए उपयुक्त तथा कई संस्करणों में उपलब्ध हैं तथा शिक्षक व उपयोगकर्ता इन्हे अपनी स्थानीय आवश्यकताओं और सन्दर्भो के अनुरूप इनका स्थानीय करण करके उपयोग कर सकते हैं।

प्रस्तुत संस्करण मध्यप्रदेश की स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भो को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई में कुछ गतिविधियों के साथ यह आइकॉन (संकेत) दिया गया है: . इसका अर्थ है कि आप उक्त विशिष्ट विषयवस्तु या शैक्षणिक प्रविधि को और अधिक समझने के लिए *TESS-India* के वीडियो संसाधनों की मदद ले सकते हैं।

TESS-India वीडियो ससांधन (Resources) भारतीय परिप्रेक्ष्य में कक्षाओं में उपयोग की जा सकने वाली सीखने–सिखाने की विविध तकनीकों को दर्शाते हैं। हमें यकीन है कि इनसे आपको इसी प्रकार की तकनीकें अपनी कक्षा में करने में मदद मिलेगी। यदि इन वीडियो संसाधनों तक आपकी पहुँच नहीं हो तो कोई बात नहीं। यह वीडियो पाठ्यपुस्तक का स्थान नहीं लेते, बल्कि उसको पढ़ाने में आपकी मदद करते हैं।

TESS-India के वीडियो संसाधनों को *TESS-India* की वेबसाइट *http://www.tess-india.edu.in/* पर ऑनलाइन देखा जा सकता है या डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त आप इन वीडियो को सीडी या मेमोरी कार्ड में लेकर भी देख सकते हैं।

संस्करण *2.0* *LL05v1*
Madhya Pradesh

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है: http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

यह इकाई उन विभिन्न विधियों के बारे में है, जिनके द्वारा कथावाचन गीत/ अभिनय /नाटक कक्षा में सीखने और भाषा के विकास में योगदान कर सकते हैं। इन विधियों में बताया गया है कि आपके विद्यार्थियों के लिए किस प्रकार एक कथावाचन की योजना बनाई जानी चाहिए और इसका मूल्यांकन कैसे किया जाना चाहिए। इसके बाद इसमें ऐसे तरीकों के बारे में सुझाव दिए गए हैं, जिनके द्वारा आप अपने विद्यार्थियों को स्वयं ही कहानियाँ ढूँढने और सुनाने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। अच्छी तरह सुनाई गई कहानी एक ऐसा अनुभव है, जिसे आपके विद्यार्थी लंबे समय तक याद रखेंगे।

इस इकाई से आप क्या सीख सकते हैं

- कहानी सुनाने के कई तरीके हैं।
- आपके विद्यार्थियों के लिए किस प्रकार एक कथावाचन की योजना बनाई जानी चाहिए और इसका मूल्यांकन कैसे किया जाना चाहिए ?
- कथावाचन के लिए किस तरह स्थानीय सामाजिक परिवेश से संसाधन प्राप्त किए जाएँ।

यह तरीका क्यों महत्वपूर्ण है

कथावाचन ऊंची आवाज़ में पढ़कर सुनाने से अलग होता है, क्योंकि इसमें पुरानी यादों को ताज़ा किया जाता है और पाठ से पढ़ना शामिल नहीं होता। इसलिए इसमें एक ही संसाधन की आवश्यकता होती है: कथावाचक।

कहानियाँ लोगों के जीवन को अर्थपूर्ण बनाने में उनकी सहायता करती हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही ऐसी कई पारंपरिक कहानियाँ हैं, जो उनसे जुड़े समाजों और समुदायों के कुछ नियमों और मूल्यों को समझने में सहायता करती हैं। भारत में अनेक भाषाओं और संस्कृतियों के होने के कारण यह ओजस्वी लोककथाओं में विशेष रूप से समृद्ध है।

आपके विद्यार्थियों के भाषा कौशल के विकास में कथावाचन एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह न केवल बुद्धिमत्ता और ज्ञान को याद रखने योग्य विधियों को आगे बढ़ाता है, बल्कि यह विद्यार्थियों की कल्पनाओं के विकास में भी मद्द करता है, क्योंकि भिन्न काल व स्थानों के विचार वास्तविक और कल्पित/खोजे गए पात्रों के द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं।

1 कथावाचन का उपयोग क्यों करें?

कहानियाँ कक्षा में बहुत शक्तिशाली माध्यम होती हैं। वे मज़ेदार, प्रेरणादायी और चुनौतीपूर्ण हो सकती हैं। वे अपने श्रोताओं को उनके दैनिक जीवन से निकालकर एक काल्पनिक विश्व में ले जा सकती हैं। वे नई अवधारणाओं के बारे में उनकी सोच को प्रेरित कर सकती हैं और एक काल्पनिक व भयमुक्त सन्दर्भ में समस्याओं और भावनाओं को समझने में लोगों की मदद करती हैं।

कथावाचन का उपयोग गणित और विज्ञान सहित कई तरह के पाठ्यक्रम विषयों में एक आकर्षक तरीके सें विषय और समस्याएँ प्रस्तुत करने के लिए भी किया जा सकता है।

विचार कीजिए

अपना बचपन याद कीजिए।

- क्या आपको कहानियाँ सुनाने वाला कोई व्यक्ति याद है? आपको कहानियाँ कौन सुनाता था: आपके पिताजी, आपकी माँ, दादा-दादी या आपके भाई-बहन? क्या आपको वे कहानियाँ याद हैं? वे क्यों खास लगती थीं?
- आपने आखिरी बार किसी को कोई कहानी कब सुनाई थी? क्या यह आपके किसी अनुभव के बारे में थी, या यह कोई काल्पनिक कथा थी?

कहानियाँ हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, कहानी साधन नही, साध्य हैं और ये कक्षा के लिए एक मूल्यवान संसाधन भी हो सकती हैं, जैसा कि आप केस स्टडी 1 में देखेंगे।

केस स्टडी 1: कथावाचन की तैयारी करना

श्री सिन्हा मुरैना मध्य प्रदेश में एक प्राथमिक स्कूल शिक्षक हैं। यहाँ वे बता रहे हैं कि अपने कथावाचन के द्वारा वे किस प्रकार अपने छोटे विद्यार्थियों को जोड़े रखते हैं।

जब मैं बहुत छोटा था, तो मेरी दादी रोज़ मुझे कहानियाँ सुनाती थी। मैं उनमें पूरी तरह डूब जाता था। अब मैं अपनी दादी की कुछ विधियों का उपयोग करके अपने बच्चों को वे कहानियाँ सुनाता हूँ।

स्कूल में मैं कक्षा एक से तीन के छोटे विद्यार्थियों को पढ़ाता हूँ। मैं उन्हें हर सप्ताह जो कहानियाँ सुनाता हूँ, वे उन्हें बहुत अच्छी लगती हैं। कुछ शिक्षकों को अपनी याददाश्त से कहानियाँ सुनाना कठिन लगता है और वे पुस्तक से पढ़कर अपने विद्यार्थियों को कहानियाँ सुनाते हैं - शायद ऐसा करना उन्हें ज्यादा सुरक्षित लगता होगा। कथावाचन के लिए अभ्यास और आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है, लेकिन यह बहुत मूल्यवान हो सकता है।

एक नई कहानी के मामले में, मैं अपनी बेटियों को या काल्पनिक श्रोताओं को यह कहानी सुनाकर पहले इसके लिए खुद को तैयार कर लेता हूँ। कहानी के वर्णनात्मक भाग के लिए मैं 'कथावाचक' के स्वाभाविक स्वर का उपयोग करता हूँ, लेकिन पात्रों को विविधता के लिए अलग अलग स्वर देता हूँ। मैं दुःख या अचंभे जैसी विशिष्ट अभिव्यक्तियों के लिए अपने चेहरे का उपयोग करता हूँ, और अभिवादन जैसे हाव–भाव के लिए अपने शारीरिक अंगो का उपयोग करता हूँ।

कहानी सुनाते समय अपने विद्यार्थियों का अवलोकन करने के कारण मैं बता सकता हूँ कि वे इस पर ध्यान दे रहे हैं और इसे पसंद कर रहे हैं या नहीं।

विचार कीजिए

श्री सिन्हा विद्यार्थियों को अपनी कहानियों में जोड़े रखने के लिए किन तकनीकों का उपयोग करते हैं?

हमारे विचारों के साथ अपने विचारों की तुलना कीजिए।

- वे अपनी आवाज़ अलग अलग विधियों से उपयोग करते हैं।
- वे हाव–भाव व्यक्त करने के लिए चेहरे और हाथों का उपयोग करते हैं
- वे अपने विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं पर ध्यान देते हैं।

अब संसाधन 1, 'कहानी, गीत, रोल प्ले और नाटक' को पढ़ें।

वीडियो: कहानी सुनाना, गीत , रोल प्ले और नाटक

2 कक्षा में कथावाचन का उपयोग करना

कहानियाँ सुनने से विद्यार्थियों को नई शब्दावली, वाक्यांशों और भाषा संरचनाओं को जानने का मौक़ा मिलता है, जिससे बोलने और लिखने की उनकी संवाद क्षमताएँ बढ़ती हैं। जब आपके विद्यार्थी कहानियाँ सुनते हैं और उन्हें खुद कहानियाँ सुनाने का मौक़ा दिया जाता है, तो उनके भाषा कौशल में वृद्धि होती हैं।

चित्र **1** कक्षा में कहानियों का उपयोग करना।

गतिविधि 1: तीन कहानियाँ
संसाधन 2 की तीनों कहानियाँ पढ़ें: 'The Wide-mouthed Frog', 'An Old Tiger and a Greedy Traveller' तथा 'A Tale from Persia'। इनमें से हर कहानी अलग तरह की है। उनके वर्णन इस प्रकार हैं। क्या आप प्रत्येक के साथ एक सही कहानी का मिलान कर सकते हैं? • एक कहानी दोहरावपूर्ण और मज़ेदार है। यह खासतौर पर भाषा और साक्षरता के विकास के लिए अच्छी है। इसमें ऐसे हावभाव हैं, जिनका उपयोग कथावाचक द्वारा किया जा सकता है, जबकि छात्र उन वाक्यांशों को दोहराकर और नकल करके इसमें शामिल हो सकते हैं। • एक कहानी पारंपरिक कथा है, जिसमें एक सशक्त नैतिक संदेश है। • एक और कहानी भी पारंपरिक कथा है, जिसमें जोड़ना, घटाना, और विषम व सम संख्याओं जैसी गणितीय अवधारणाएं हैं। एक या अधिक कहानियाँ चुनें। अपने परिवार या साथी शिक्षकों के साथ इन्हें ऊंची आवाज़ में बोलने का अभ्यास करें। इसके बाद अब पाठ से सहायता लिए बिना इसे अपने शब्दों में सुनाने की कोशिश करें। बेझिझक कहानी के भागों में बदलाव करें। यह जैसी लिखी है, ठीक उसी तरह उसे बताना आवश्यक नहीं है। जहाँ आवश्यक हो, कहानी के साथ कुछ हाव–भाव का उपयोग करें।

अगली गतिविधि आपको बताती है कि अपनी कक्षा के लिए एक कथावाचन सत्र की योजना कैसे बनाएँ। आपने गतिविधि 1 में जो कहानियाँ पढ़ी थीं, आप उनमें से किसी का उपयोग कर सकते हैं या आप कोई अन्य कहानी चुन सकते हैं, जिसमें आपको मज़ा आता हो और जिसे आप आत्मविश्वास के साथ सुना सकते हों।

गतिविधि 2: एक कथावाचन पाठ की योजना बनाना
अपनी कक्षा के लिए एक उपयुक्त कहानी चुनें। आप कोई परिचित लोककथा चुन सकते हैं, पाठ्यपुस्तक से कोई कहानी ले सकते हैं या अपने अथवा किसी दूसरे के अनुभव से कोई रोचक घटना सुना सकते हैं। इस उदाहरण में संसाधन 2 की कहानी 'The Wide-mouthed Frog' का उपयोग किया गया है, लेकिन आप कोई अन्य कहानी भी चुन सकते हैं और उसके अनुसार योजना को अनुकूलित कर सकते हैं। • शिक्षक बच्चों की उसकी पाठ्यपुस्तक से विभिन्न जानवरों से संबंधित किसी कहानी को चुन सकते हैं तथा विद्यार्थियों से उस कहानी के अनुरूप प्रश्न करें। 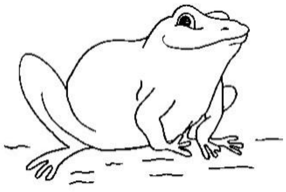 चित्र **2** The wide-mouthed frog।

- यह कहानी अच्छी तरह याद करें और प्रत्येक पात्र के लिए अलग-अलग आवाज़ों, अभिव्यक्तियों या हावभावों का उपयोग करके पाठ के बिना इसे सुनाने का अभ्यास करें।
- कहानी के मुख्य शब्दों और अभिव्यक्तियों की पहचान करें (उदा. मेंढक, बकरी, भालू, चौड़ा मुँह, माँ, दूध, बीज, कीड़े). इन मुख्य शब्दों को चित्रित करने वाले चित्र बनाएँ या वस्तुएँ ढूँढें। इन चित्रों और वस्तुओं से आपको कहानी सुनाते समय इसे याद रखने में मदद मिलेगी।
- अपने विद्यार्थियों को अपने आस-पास इकट्ठा करें। उनसे कुछ शुरूआती प्रश्न करें, जैसे: 'क्या आपको पता है ?
    - मेंढक कैसा होता है?
    - वह कैसा दिखाई देता है?
    - वह कैसी आवाज़ निकालता है?
    - वह किस तरह चलता है?
    - मेंढ़क की तरह चलकर आप स्वयं बताइए।
    - मेंढक को क्या खाना पसंद है?
- कहानी के अन्य जानवरों के बारे में बात करें और उनके बारे में प्रश्न कीजिए।
- यदि आवश्यक हो, तो आपके प्रश्नों को और किसी नए शब्द या अभिव्यक्ति को समझने में विद्यार्थियों की मदद करने के लिए उनके घर की भाषा का उपयोग करें।
- उन्हें समझाएँ कि आप जो कहानी बताने वाले हैं, वह एक ऐसे मेंढक के बारे में है, जिसका मुंह बहुत चौड़ा था। अपना मुंह चौड़ा करके बताएँ।
- अलग अलग पात्रों के लिए उपयुक्त आवाज़ों का उपयोग करते हुए, प्रभावी बनाने के लिए आवाज़ में उतार-चढ़ाव लाकर, हावभावों का उपयोग करके, और इसके साथ कोई वस्तु या चित्र दिखाकर कहानी सुनाएँ।
- बीच-बीच में रूककर अपने विद्यार्थियों से इस तरह के प्रश्न कीजिए।
    - 'पक्षी की माँ अपने बच्चों को क्या खिलाती हैं?'
    - 'अब वह किससे मिलने जा रही है?' (यदि आपके पास उत्तर का चित्र है, तो उन्हें दिखाएँ।)
- कहानी के अंत के बारे में पूरी कक्षा से चर्चा करें। इस प्रकार के प्रश्न कीजिए जैसे:
    - 'मेंढक क्यों डरा हुआ था?'
    - 'मेंढक ने भालू को किस तरह उत्तर दिया? और क्यों?'
    - 'आपको क्या लगता है, मेंढक ने आगे क्या किया होगा?'
- इस बारे में सोचें कि पाठ कैसा रहा, और ऐसा करते समय टिप्पणियाँ लिखते जाएँ। कौन-सी चीजें अच्छी रहीं? अगली बार आप क्या सुधार करेंगे? क्या इसमें सभी विद्यार्थी शामिल थे? यदि ऐसा लगता है कि कुछ विद्यार्थी समझ नहीं पाए, तो इसका कारण क्या हो सकता है? क्या उनमें से सभी को कहानी के लिए प्रतिक्रिया देने या उसके बारे में बात करने का मौका मिला था? इस तरह पाठ का मूल्यांकन करने से आपको पता चलेगा कि आपके विद्यार्थी किस प्रकार अपने भाषा और सुनने के कौशल को विकसित कर रहे हैं, और साथ ही आपको अपनी कथावाचन तकनीकों में सुधार करने में भी मदद मिलेगी।
- कहानी सुनाते समय अपने सभी विद्यार्थियों पर दृष्टि रखते हुए उनसे चर्चा करते रहें चाहे वे आपके पास बैठे हों या आपसे दूर।

- कहानी सुनाना सुनने के अलावा भी विद्यार्थियों की कई गतिविधियों को प्रोत्साहित कर सकता है। विद्यार्थियों से कहा जा सकता है कि वे कहानी में बताए गए सभी रंगों या संख्याओं को लिखें, समूहों में इन्हें प्रदर्शित करें, कहानी का अंत बदलें, दो पात्रों की तुलना करें, या इसमें उठाई गई समस्याओं के बारे में चर्चा करें।

- उन्हें समूहों में बाँटा जा सकता है और चित्र या वस्तुएँ देकर किसी अन्य दृष्टि से कहानी दोबारा सुनाने को कहा जा सकता है, या पात्रों के कुछ अंश लेकर एक साथ एक नाटिका की जा सकती है।

बड़ी उम्र के विद्यार्थियों को एक ज्यादा जटिल कहानी का विश्लेषण करने, किसी विशिष्ट घटना की वैज्ञानिक व्याख्या पर विवाद करने, तथ्यों को कल्पनाओं से अलग करें, या कोई भी संबंधित गणितीय समस्याएँ सुलझाने के लिए आमंत्रित किया जा सकता है।

3 लोक कथाओं को एकत्र करना

कथावाचन एक साझा गतिविधि है, जो परिवार या समुदाय को साथ जोड़कर रख सकती है, इतिहास की याद दिला सकती है, और भाषाओं और संस्कृतियों को सुरक्षित रख सकती है। ऐसी कई कहानियाँ होती हैं, जो समुदाय के बडे–बूढ़ो को याद होंगी। इन कहानियों को इकट्ठा करना आपके विद्यार्थियों को, उनके परिवारों को और समुदाय को स्कूल के जीवन में शामिल करने का एक रोमांचक तरीका है। आप केस स्टडी 2 में दिए

उदाहरण के बारे में पढ़ सकते हैं कि किस तरह एक कक्षा में ऐसा किया जाता है।

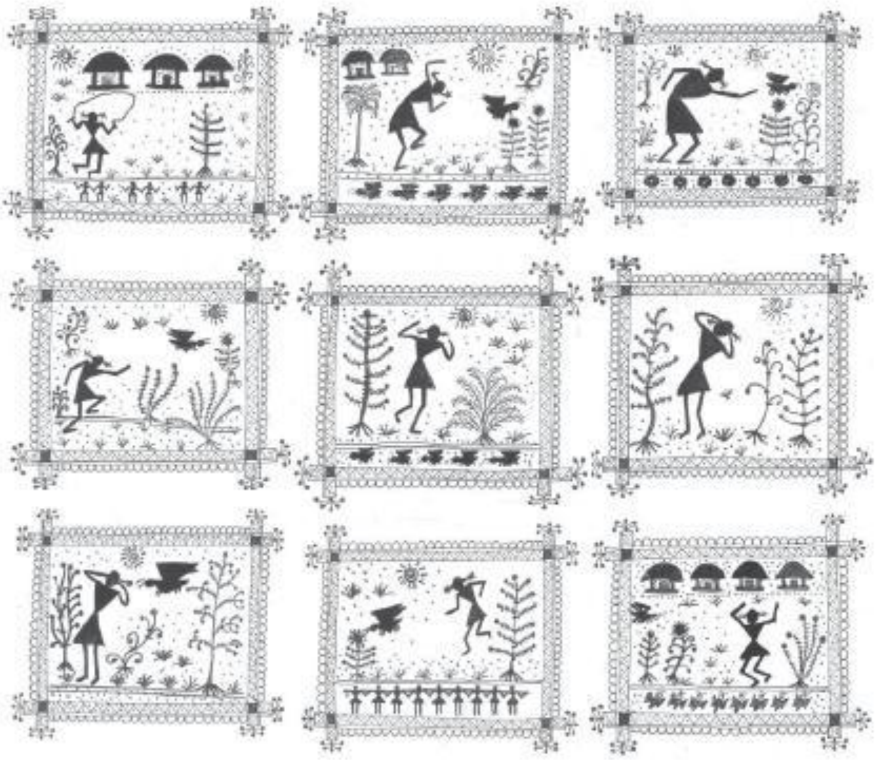

चित्र **3** लोक कथाएँ आपके अध्यापन के लिए एक उपयोगी संसाधन हैं।

केस स्टडी 2: लोक कथाएँ इकट्ठा करना

सुश्री मीना सागर की एक प्राथमिक स्कूल शिक्षिका हैं। यहाँ वे बता रही हैं कि किस तरह वे अपने विद्यार्थियों को उनके आस पास या अंचल की कहानियाँ सुनाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

मैं अपने विद्यार्थियों से कहती हूँ कि वे अपने परिवार के सदस्यों या पड़ोसियों से एक कहानी सीखें। मैं उन्हें कहानी पाने और याद करने के लिए एक सप्ताह का समय देती हूँ। इसके बाद मैं हर दिन एक या दो विद्यार्थियों को आमंत्रित करती हूँ कि वे अलग अलग आवाजों, हाव–भावों और क्रियाओं का उपयोग करके कक्षा को अपनी कहानी सुनाएँ।

जब मैंने पहली बार ऐसा किया, तो मेरे विद्यार्थियों ने हिन्दी में अपनी कहानियाँ सुनाई। हालांकि, अगली बार मैंने सागर मध्यप्रदेश में बोली जाने वाली विभिन्न स्थानीय भाषाओं, जैसे मालवी, निमाड़ी, बघेली, बुन्देली, भीली की कहानियाँ शामिल करना तय किया। मेरे जो विद्यार्थी ये भाषाएँ बोलते हैं, मैंने उनसे कहा कि वे एक कहानी खोजे और कक्षा को सुनाएँ। कहानी पूरी करने के बाद उन्होंने अपने सहपाठियों के साथ उसका हिन्दी में अनुवाद किया।

इसके बाद मैंने पूरी कक्षा को सुनी हुई कहानी की मुख्य घटनाओं या प्रमुख पात्रों का वर्णन करने वाले चित्र बनाने या अपनी कॉपी किताबों में इस बारे में लिखने को कहा।

अपने साथियों के साथ अपने समुदायों की कहानियाँ साझा करने की इस गतिविधि से ऐसा प्रतीत हुआ कि कक्षा में मेरे विद्यार्थियों के बीच मज़बूत संबंध बन रहे हैं।

विचार कीजिए

- विद्यार्थियों को उनके घर की भाषा में कहानियाँ सुनाने के लिए प्रोत्साहित करने का क्या महत्व है?
- किस तरह शर्मीले विद्यार्थियों की सहायता की जा सकती है, ताकि वे अपने सहपाठियों को कहानियाँ सुनाएँ?
- आप विद्यार्थियों की कहानियों के अनुकरण के लिए किन अन्य गतिविधियों के बारे में सोच सकते हैं?

कहानियाँ, गीत, कविताएँ या समुदाय की अन्य मौखिक परंपराएँ स्कूल, आपके विद्यार्थियों के परिवारों और अन्य स्थानीय लोगों के बीच एक सकारात्मक संबंध बनाती हैं। इससे विद्यार्थी विचारपूर्ण प्रश्न पूछने और अपने इलाके के इतिहास और संस्कृति के बारे में ध्यान से सुनने में सक्षम होते

हैं। विद्यार्थियों को ये कहानियाँ अपने घर की भाषा में फिर से सुनाने के लिए प्रोत्साहित करने से स्थानीय परिवेश में इन भाषाओं के महत्व को बल मिलता है। इससे विद्यार्थी अपनी हिन्दी सुधारने के लिए इन भाषाओं का उपयोग कर सकते हैं।

यदि कोई छात्र अपनी कहानियाँ सुनाने में झिझक दिखाते हैं, तो आप उनसे पाठ के बाद अपनी कहानियाँ सुनाने को कह सकते हैं। इससे उन्हें अपने साथियों के सामने सुनाने के बजाय, एक सुरक्षित और निजी स्थान पर इसे सुनाने का अभ्यास करने का मौका मिलेगा। सुनिश्चित करें कि आप इन विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए उनकी प्रशंसा करें और उन्हें प्रोत्साहित करें। आप विद्यार्थियों में से उनके ही घर की भाषा बोलने वाले दोस्तों के साथ जोड़ियों में बिठाकर भी उनका आत्मविश्वास बढ़ाने की कोशिश कर सकते हैं।

कक्षा में समावेश और सहभागिता के सिद्धांतों के बारे में ज्यादा जानकारी के लिए मुख्य संसाधन 'सभी की सहभागिता पढ़ें।

वीडियो: सभी की सहभागिता

विद्यार्थियों की कहानियों के फॉलो अप के बारे में और अधिक विचारों के लिए गतिविधि 3 देखें।

गतिविधि 3: समुदाय से कहानियाँ एकत्र करना

आपको विद्यार्थियों की कहानियों के संग्रह को व्यवस्थित करने के लिए समय की और साथ ही संवेदनशीलता तथा ध्यानपूर्वक योजना बनाने की ज़रूरत पड़ेगी।

- एक मार्गदर्शक के रूप में केस स्टडी 2 का उपयोग करके अपने विद्यार्थियों को तैयार करें कि वे घर में अपने परिवार के सदस्यों से पूछें कि क्या उन्हें कोई कहानी, गीत या कविता मालूम है। विद्यार्थियों को हिन्दी में या उनके घर की भाषा में, ये कहानियाँ, गीत या कविताएँ याद करने और यदि वे चाहें, तो इनके साथ आवाज़, हावभाव और क्रियाओं का उपयोग सीखने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।
- हर दिन या सप्ताह में एक बार एक ख़ास समय रखें, जब विद्यार्थी अपनी कहानी सुनाएँगे।
- पूरी कक्षा को कहानी सुनाने से पहले उन्हें किसी साथी के साथ या एक छोटे समूह में कहानी का अभ्यास करने का अवसर दीजिए।
- शेष कक्षा को यह सिखाएँ कि अच्छे और उत्साही श्रोता कैसे होने चाहिए। कहानियाँ सुनाने के आपके विद्यार्थियों के प्रयासों के लिए सकारात्मक प्रतिक्रिया दें और उनके सहपाठियों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।
- यदि कहानी किसी स्थानीय भाषा में है, तो इसके हिन्दी अनुवाद के बारे में चर्चा करने का समय दें, जिसमें कहानी से संबंधित मुख्य शब्दों पर ध्यान केन्द्रित किया जाए।
- देखें कि क्या आपके विद्यार्थियों को अपनी कहानियाँ दूसरी कक्षाओं को, स्कूल के सांस्कृतिक कार्यक्रमों/प्रार्थना सभा में या किसी स्थानीय कार्यक्रम में सुनाने का मौका मिल सकता है।
- अपने विद्यार्थियों से कहिए कि वे अपनी कॉपी किताबों में चित्रों के साथ अपनी कहानियाँ लिखकर बतालाएँ।

4 सारांश

इस इकाई में ऐसी कई विधियों के बारे में बताया गया है, जिनके द्वारा भाषा और साक्षरता की कक्षा में कथावाचन का उपयोग किया जा सकता है। इसमें उन चरणों की एक श्रृंखला की रूपरेखा बताई गई है, जिनका उपयोग आप अपने विद्यार्थियों की उम्र और रुचियों के लिए उपयुक्त कथावाचन सत्रों की योजना बनाने के लिए कर सकते हैं। इसमें ऐसे तरीके भी प्रस्तावित किए गए हैं, जिनके द्वारा आपके विद्यार्थी कहानियाँ एकत्रित कर सकते हैं और अपने सहपाठियों को सुना सकते हैं,जिससे स्कूल और स्थानीय समुदाय के बीच मज़बूत संबंध विकसित होंगे। इससे विद्यार्थियों को अपनी घर की भाषा में यह महसूस करने में मदद मिलेगी कि स्कूल में उनके घर की भाषा और संस्कृति को महत्व दिया जाता है, और इससे उन्हें अपनी हिन्दी में सुधार करने के लिए इन भाषाओं के कौशल का उपयोग करने की क्षमता भी मिलेगी। अधिकतर देखने को मिलता है कि विद्यार्थियों को कहानियाँ सुनना और सुनाना अच्छा लगता है। आप अपने पाठों में जिन कहानियों का उपयोग कर सकते हैं, उनकी संख्या बढ़ाने के तरीके ढूँढने की कोशिश करें, क्योंकि वे किसी भी विषय क्षेत्र में सीखने के लिए अमूल्य साबित हो सकती हैं।

संसाधन

संसाधन 1: कहानी , गीत, रोल प्ले अभिनय और नाटक का उपयोग

विद्यार्थी उस समय सबसे अच्छे ढंग से सीखते हैं जब वे शिक्षण के अनुभव से सक्रिय रूप से जुड़े होते हैं। कहानी तो वैसे भी जीवन का प्रतिबिम्ब होती है, इसके द्वारा दूसरों के साथ परस्पर संवाद और अपने विचारों को साझा अर्थात भागीदारी करने से आपके विद्यार्थी अपनी समझ की गहराई बढ़ा सकते हैं। कथावाचन, गीत, अभिनय करना और नाटक कुछ ऐसी विधियाँ हैं, जिनका उपयोग पाठ्यक्रम के कई क्षेत्रों में किया जा सकता है,

जिनमें गणित और विज्ञान भी शामिल हैं।

कथावाचन

कहानियाँ हमारे जीवन को अर्थपूर्ण बनाने में मदद करती हैं। कई पारम्परिक कहानियाँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही हैं। जब हम छोटे थे तब कहानिया हमें सुनाई गई थीं और हम जिस समाज में पैदा हुए हैं, उसके कुछ नियम व मान्यताएँ वे हमें समझाती हैं।

कहानियाँ कक्षा में बहुत सशक्त माध्यम होती हैं: वे:

- मनोरंजक, उत्तेजक व प्रेरणादायक हो सकती हैं।
- हमें प्रतिदिन के जीवन से कल्पना की दुनिया में ले जाती हैं।
- चुनौतीपूर्ण हो सकती हैं ।
- नए विचार सीखने की प्रेरणा दे सकती हैं।
- भावनाओं को समझने में मदद कर सकती हैं।
- समस्याओं के बारे में वास्तविकता से अलग और इस कारण कम ख़तरनाक संदर्भ में सोचने में सहायता कर सकती हैं।

जब आप कहानियाँ सुनाएँ तो सुनिश्चित करें कि आप उनकी आँखों में देखें। यदि आप जोखिम भरे विभिन्न पात्रों के लिए भिन्न स्वरों का उपयोग करते हैं और उदाहरण के लिए उपयुक्त समय पर अपनी आवाज़ की तीव्रता और सुर को बदलकर फुसफुसाते या चिल्लाते हैं, तो उन्हें आनन्द आएगा। कहानी की प्रमुख घटनाओं का अभ्यास कीजिए ताकि आप इसे पुस्तक के बिना स्वयं अपने शब्दों में मौखिक रूप से सुना सकें। कक्षा में कहानी को मूर्त रूप देने के लिए आप वस्तुओं या कपड़ों जैसी सामग्री भी ला सकते हैं। जब आप कोई नई कहानी सुनाएँ, तो उसका उद्देश्य या सन्देश समझाना न भूलें और विद्यार्थियों को इस बारे में बताएँ कि वे क्या सीख सकते हैं। आपको प्रमुख शब्दावली उन्हें बतानी होगी व कहानी की मूलभूत संकल्पनाओं या संदेशों को बारे में उन्हें जागरूक रखना होगा। आप कोई पारंपरिक कहानी कहने वाला भी विद्यालय में ला सकते हैं, लेकिन सुनिश्चत करें कि जो सीखा जाना है, वह कहानी कहने वाले व विद्यार्थियों, दोनों को स्पष्ट हो।

कहानी सुनाना सुनने के अलावा भी विद्यार्थियों की कई गतिविधियों को प्रोत्साहित कर सकता है। विद्यार्थियों से कहानी में आए सभी रंगों के नाम लिखने, चित्र बनाने, प्रमुख घटनाएँ याद करने, संवाद बनाने या अंत को बदलने को कहा जा सकता है। उन्हें समूहों में विभाजित करके चित्र या सामग्री देकर कहानी को किसी और परिप्रेक्ष्य में कहने को कहा जा सकता है। किसी कहानी का विश्लेषण करके, विद्यार्थियों से कल्पना में से तथ्य को अलग करने, किसी अद्भुत घटना के वैज्ञानिक स्पष्टीकरण पर चर्चा करने या गणित के प्रश्नों को हल करने को कहा जा सकता है।

विद्यार्थियों से खुद अपनी कहानी बनाने को कहना बहुत सशक्त उपाय है। यदि आप उन्हें काम करने के लिए कहानी का कोई ढाँचा, सामग्री व भाषा देंगे, तो विद्यार्थी गणित व विज्ञान के जटिल विचारों पर भी खुद अपनी बनाई कहानियाँ कह सकते हैं। वास्तव में, वे अपनी कहानियों की उपमाओं के द्वारा विचारों से खेलते हैं, अर्थ का अन्वेषण करते हैं और कल्पना को समझने योग्य बनाते हैं।

गीत

कक्षा में गीत और संगीत के उपयोग से अलग-अलग विद्यार्थियों को योगदान करने, सफल होने और उन्नति करने का अवसर मिल सकता है। एक साथ मिलकर गाने से जुड़ाव बनता है और इससे सभी छात्र खुद को इसमें शामिल महसूस करते हैं क्योंकि यहाँ ध्यान किसी एक व्यक्ति के प्रदर्शन पर केंद्रित नहीं होता। गीतों के सुर और लय के कारण उन्हें याद रखना सरल होता है और इससे भाषा व बोलने से विकास में मदद मिलती है।

- विद्यार्थी स्वर लय और भावों के अनुकूल गीत गा सकते है।
- गीत में निहित अनुभूतियों की समझा विकसित होती है।
- विद्यार्थी को रसानुभूति प्राप्त होती है।
- उनमें सृजनात्मकता का विकास होता है।
- काव्य के प्रति प्रेम उत्पन्न होता हैं।
- विंद्यार्थियों में गीतकार के भावों, कल्पनाओ और अभिव्यक्तियों के सौन्दर्य की परख की योयता उत्पन्न होती है।

संभव है कि आप स्वयं आत्मविश्वासी गायक न हों, लेकिन निश्चित रूप से आपकी कक्षा में कुछ अच्छे गायक होंगे, जिन्हें आप अपनी सहायता के लिए बुला सकते हैं। आप गीत को जीवंत बनाने और संदेश व्यक्त करने में सहायता के लिए गतिविधि और हाव–भाव का उपयोग कर सकते हैं। आप उन गीतों का उपयोग कर सकते हैं, जो आपको मालूम हैं और अपने उद्देश्य के अनुसार उनके शब्दों में बदलाव कर सकते हैं। गीत जानकारी को याद करने और याद रखने का भी एक उपयोगी तरीका हैं – यहाँ तक कि सूत्रों और सूक्तियों को भी एक गीत या कविता के रूप में रखा जा सकता है। आपके विद्यार्थी पुनरावृति के उद्देश्य से गीत या भजन बनाने में भी समर्थ हो सकते हैं।

रोल प्ले (पात्र अभिनय)

अभिनय वह गतिविधि होती है, जिसमें विद्यार्थी कोई भूमिका निभाते हैं और किसी छोटे परिदृश्य के दौरान, वे उस भूमिका में बोलते और अभिनय करते हैं, तथा वे जिस पात्र की भूमिका निभा रहे हैं, उसके व्यवहार और उद्देश्यों को अपना लेते हैं। इसके लिए कोई विशेष वस्तु नहीं दी जाती, लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि विद्यार्थियों को शिक्षक द्वारा पर्याप्त जानकारी दी जाए, ताकि वे उस भूमिका को समझ सकें। भूमिका निभाने वाले विद्यार्थियों को अपने विचारों और भावनाओं की त्वरित अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

भूमिका निभाने के कई लाभ हैं क्योंकि:

- इसमें वास्तविक जीवन की स्थितियों पर विचारक के अन्य लोगों की भावनाओं के प्रति समझ विकसित की जाती है।
- इससे निर्णय लेने का कौशल विकसित होता है।
- अभिनय की क्रियाएँ अत्यन्त शिक्षाप्रद होती है।
- यह विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल करती है और सभी विद्यार्थियों को योगदान करने का अवसर मिलता है।
- इनसे हमें अपने जीवन को परिस्थितियो के अनुकूल ढ़ाल सकता है।
- यह विचारों के उच्चतर स्तर को प्रोत्साहित करती है।
- विद्यार्थियों में मानसिक एवं वौद्विक विकास करने में सहायक है।

भूमिका निभाने से छोटे विद्यार्थियों को अलग-अलग सामाजिक स्थितियों में बात करने का आत्मविश्वास विकसित करने में मदद मिल सकती है, उदाहरण के लिए,किसी स्टोर में खरीददारी करने, किसी स्थानीय स्मारक पर पर्यटकों को रास्ता दिखाने या एक टिकट खरीदने का अभिनय करना। आप कुछ वस्तुओं और चिह्नों के द्वारा सरल दृश्य तैयार कर सकते हैं, जैसे 'कैफे', 'डॉक्टर की सर्जरी' या 'गैरेज'। अपने विद्यार्थियों से पूछें, 'यहाँ कौन काम करता है?', 'वे क्या कहते हैं?' और 'हम उनसे क्या पूछते हैं?' और उन्हें इन क्षेत्रों की भूमिकाओं में बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करें, तथा उनकी भाषा के उपयोग का अवलोकन करें।

नाटक करने से वरिष्ठ विद्यार्थियो में जीवन के कौशलों का विकास हो सकता है। उदाहरण के लिए, कक्षा में हो सकता है कि आप इस बात का पता लगा रहे हों कि किसी समस्या को कैसे हल किया जाए। इसके बजाय अपने विद्यालय या समुदाय से कोई वास्तविक घटना लें, आप इसी तरह के, लेकिन इससे भिन्न, किसी परिदृश्य का वर्णन कर सकते हैं, जिसमें यही समस्या उजागर होती हो। विद्यार्थियों को भूमिकाएँ आवंटित करें या उन्हें अपनी भूमिकाएँ खुद चुनने को कहें। आप उन्हें योजना बनाने का समय दे सकते हैं या उनसे तुरंत भूमिका अदा करने को कह सकते हैं। भूमिका अदा करने की प्रस्तुति पूरी कक्षा को दी जा सकती है या विद्यार्थी छोटे समूहों में भी कार्य कर सकते हैं, ताकि किसी एक समूह पर ध्यान केंद्रित न रहे। ध्यान दें कि इस गतिविधि का उद्देश्य भूमिका निभाने का अनुभव लेना और इसका अर्थ समझाना है; आप उत्कृष्ट अभिनय प्रदर्शन या बॉलीवुड के अभिनय पुरस्कारों के लिए अभिनेता नहीं ढूँढ रहे हैं।

भूमिका अदा करने का उपयोग विज्ञान और गणित में भी करना संभव है। विद्यार्थी अणुओं के व्यवहार की नकल कर सकते हैं, और एक-दूसरे से संपर्क के दौरान कणों की विशेषताओं का वर्णन कर सकते हैं या उनके व्यवहार को बदलकर ऊष्मा या प्रकाश के प्रभाव को दर्शा सकते हैं। गणित में, विद्यार्थी कोणों या आकृतियों की भूमिका निभाकर उनके गुणों और संयोजनों को खोज सकते हैं।

नाटक

कक्षा में नाटक का उपयोग अधिकतर विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए एक अच्छी रणनीति है। नाटक कौशलों और आत्मविश्वास का निर्माण करता है, और उसका उपयोग विषय के बारे में आपके विद्यार्थियोंकी समझ का आकलन करने के लिए भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यह दिखाने के लिए कि संदेश किस प्रकार से मस्तिष्क से कानों, आंखों, नाक, हाथों और मुंह तक जाते हैं और वहां से फिर वापस आते हैं, दूरभाष का उपयोग करके मस्तिष्क किस प्रकार काम करता है इसके बारे में अपनी समझ पर एक नाटक किया गया। या संख्याओं को घटाने के तरीके को भूल जाने के भयानक परिणामों पर एक लघु, मज़ेदार नाटक युवा विद्यार्थियों के मन में सही पद्धतियों को स्थापित कर सकता है।

नाटक प्रायः शेष कक्षा, स्कूल के लिए या अभिभावकों और स्थानीय समुदाय के लिए अभिनय की ओर विकसित होता है। यह लक्ष्य विद्यार्थियों को कोई चीज प्रदान करेगा, जिसकी दिशा में वे काम करेंगे और उन्हें प्रेरित करेगा। नाटक तैयार करने की रचनात्मक प्रक्रिया से समूची कक्षा को जोड़ा जाना चाहिए। यह जरूरी है कि आत्मविश्वास के स्तरों के अंतरों को ध्यान में रखा जाये। हर एक व्यक्ति का अभिनेता होना जरूरी नहीं है; छात्र अन्य तरीकों से योगदान कर सकते हैं (संयोजन करना, वेशभूषा, मंच पर मददगार) जो उनकी प्रतिभाओं और व्यक्तित्व से अधिक नजदीकी से संबद्ध हो सकते हैं।

यह विचार करना आवश्यक है कि अपने विद्यार्थियों के सीखने में मदद करने के लिए आप नाटक का उपयोग क्यों कर रहे हैं। क्या यह भाषा विकसित करने (उदा. प्रश्न पूछना और उत्तर देना), विषय के ज्ञान (उदा. खनन का पर्यावरणीय प्रभाव), या विशिष्ट कौशलों (उदा. टीम वर्क) का निर्माण करने के लिए है? सावधानी बरतें कि नाटक का सीखने का प्रयोजन अभिनय के लक्ष्य में खो न जाय।

संसाधन 2: तीन कहानियाँ

‘The Wide-mouthed Frog’

Once there was a wide-mouthed frog who always talked too much. She decided to go around to all the other animals and ask them what kind of food they feed their babies.

As the wide-mouthed frog hopped along, she met Mother Bird. The wide-mouthed frog asked, ‘Mother Bird, what kind of food do you feed your babies?’ [*Use a very wide mouth when telling the frog’s part.*]

‘I feed my babies … [*Ask your students ‘What do you think mother bird feeds her babies?’*] … insects!’

And the wide-mouthed frog said with her mouth wide open, ‘Oh, is that so?’

Then the wide-mouthed frog met … [*Show the picture and ask ‘Who do you think she is going to meet this time?’*] … Mother Goat and asked her, ‘Mother Goat, what kind of food do you feed your babies?’

The mother goat said, ‘I feed my babies … [*Ask your students ‘What do you think mother goat feeds her babies?’*] … milk!’

Then the wide-mouthed frog said with her mouth wide open, ‘Oh, is that so?’

[*You can add one or two more animals that your students will be familiar with. The last animal should be a rather frightening one to the frog, such as a crocodile or bear – as follows.*]

Then the wide-mouthed frog met a mother bear and asked, ‘Mother Bear, what kind of food do you feed your babies?’

When the mother bear saw the wide-mouthed frog, she was very happy and said, ‘Ooooh!’ The wide-mouthed frog became very afraid when she saw her great big mouth.

The mother bear said, ‘I feed my babies wide-mouthed frogs!’

The wide-mouthed frog said, with a very small mouth, ‘Oh, is that so?’ [*Remember to use a small mouth!*]

‘An Old Tiger and a Greedy Traveller’

Once upon a time, there lived a tiger in a forest. With the passing year, he became too old to hunt. One day, the tiger was walking by the side of a lake and suddenly saw a gold bangle. Quickly he picked up the bangle and thought that he could use it as a lure to catch someone. As he was thinking this, a traveller happened to pass by on the other side of the lake.

The tiger instantly thought to himself, ‘What a delicious meal he would make!’ He planned a scheme to attract the traveller. He held the bangle in his paw, making it visible to the traveller and said, ‘Would you like to take this gold bangle? I don’t require it.’ At once, the traveller wanted to take the bangle, but he hesitated to go near the tiger. He knew that it was risky, yet he sought the beautiful gold bangle. He planned to be cautious, so he asked the tiger, ‘How can I believe you? I know you are a beast and would kill me.’

The tiger innocently said, ‘Listen traveller, in my youth, I was wicked unquestionably, but now I have changed. With the advice of a Sanyasi, I have left all evil. Now I am all alone in this world and have engaged myself in kind deeds. Moreover, I have grown old. I have no teeth and my claws are blunt.

So, there is no need to fear me.' The traveller was taken in by this talk and his love for gold soon overcame his fear of the tiger. He jumped into the lake to wade across to the tiger.

But as the tiger planned, the traveller got trapped in the marsh. On seeing this, the tiger consoled him and said, 'Oh! You need not worry. I'll help you.' Gradually he came towards the traveller and seized him. As the traveller was being dragged out onto the bank, he thought to himself, 'Oh! This beast's talk of saintliness took me in totally. A beast is always a beast. If only I had not let my greed overcome my reason, I could be alive.' However, it was too late; the tiger killed the traveller and ate him up. And so the traveller became a victim of greed and the tiger was successful in his evil plan.

Moral: greed never goes unpunished.

'A Tale from Persia'

Long ago, a man from Persia hosted a Bedouin from the desert, sitting him at table with his wife, two sons and two daughters. The wife had roasted one chicken, and the host told his guest: 'Share it out among us,' meaning to make fun of him. The Bedouin said he did not know how, but if they humoured him he would try. When they agreed, he took the chicken and chopped it up, distributing it with these words: 'The head for the head of the family,' as he gave his host the bird's head; 'the two wings for the two boys, the two legs for the two girls,' giving them out, and 'the tail for the old woman,' giving the wife the tail of the bird and finally, taking the best portion for himself, 'The breast for the guest!' he said.

Now, the next day, the host said to his wife (having enjoyed this joke) that she should roast five chickens, and when lunchtime came he told the Bedouin, 'Share them out among us.'

'I have an idea,' his guest replied, 'that you are offended.'

'Not at all. Share them out.'

'Would you like me to do it by even numbers or odd?'

'By odd numbers.'

'Very well,' said the Bedouin. 'You, your wife and one fowl make three.' (Giving them one chicken.) 'Your two sons and one fowl make three. Your two daughters and one fowl make three. And I and two chickens make three,' he finished, taking two chickens for himself; and the joke was on the host again.

Seeing them eyeing his share, he smiled and continued, 'Perhaps you are not content with my method. Shall I share them out by even numbers, then?' When they said yes, he replied, 'Well, then, my host, you and your two sons and one fowl make four. Your wife, her two daughters and one fowl make four.' He passed the three male members of the household one chicken, and the three female members got one. 'And,' he concluded, giving himself three chickens, 'myself plus three fowls makes four.'

अतिरिक्त संसाधन

- Indian folk tales: http://www.culturalindia.net/indian-folktales/
- The World Storytelling Institute's website includes resources for teachers (http://www.storytellinginstitute.org/12.html) and a wealth of links to stories, many from India (http://www.storytellinginstitute.org/87.html)
- The Storytelling in the Classroom website has a variety of ideas and stories for teachers to tell in the classroom: http://www.storyarts.org/classroom/index.html

- Katha is a publisher that has produced more than 300 books from various regions in India; it also provides training in storytelling: http://www.katha.org/site/katha-bookstore
- Kathalaya provides training and resources for teachers in storytelling in the classroom: http://kathalaya.org/
- The Tallest Story Competition includes animated stories from different tribal groups in India: http://www.talleststory.com/
- The Society for Storytelling website contains a lot of factsheets for learning about storytelling: http://www.sfs.org.uk/resources

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Morgan, J. and Rinvolucri, M. (1983) *Once Upon a Time*. Cambridge: Cambridge University Press.

Slattery, M. and Willis, J. (2001) *English for Primary Teachers*. Oxford: Oxford University Press.

Society for Storytelling (2004) 'Telling tales: a beginner's guide to telling stories' (online), March. Available from: http://www.sfs.org.uk/content/telling-tales-beginners-guide-telling-stories (accessed 18 November 2014).

Wakefield, D. (1992) *The Wide-Mouthed Frog*, Illustrated by Spaeth, C. SIL International.

Wright, A. (1996) *Storytelling with Children*. Oxford: Oxford University Press.

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/)। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा इस परियोजना के लिए लाइसेंस के अंतर्गत ही उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons लाइसेंस से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि इस सामग्री का उपयोग अननुकूलित रूप से केवल TESS-India परियोजना के भीतर किया जा सकता है और किसी भी बाद के OER संस्करणों में नहीं। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस यूनिट में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रातों का कृतज्ञतापूर्ण आभार:

चित्र 3: ओडिशा के गजपति जिले से एराम गोमांगो के सौजन्य से (Figure 3: courtesy of Eram Gomango from Gajipati district of Odisha)।

संसाधन 2: 'The Wide-mouthed Frog', कीथ फॉकनर के 'The Wide-mouthed Frog' से लिया गया अंश; 'An Old Tiger and a Greedy Traveler', 12 वीं सदी में गद्य और काव्य में लिखित संस्कृत कथा-संग्रह हितोपदेश से लिया गया (Resource 2: 'The Wide-mouthed Frog', extract adapted from Keith Faulkner's 'The Wide-mouthed Frog'; 'An Old Tiger and a Greedy Traveler', adapted from the *Hitopadesha*, a collection of Sanskrit fables in prose and verse from the 12th century)।

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन अध्यापक शिक्षकों, मुख्याध्यापकों, अध्यापकों और थ्वद्यार्थियोंके प्रति आभार प्रकट किया जाता है, जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।